

जै जै सुनैना कुमारी बलहारी है बलहारी ॥
माधव मास की शुक्ला नौमी शुभ वेला है आई
धन्य धन्य है दिवस आज को प्रघटीं रघुवर प्यारी ॥
जग जननी की जन्म भूमि श्री मिथिला भाग भरी है
साकेत नाथ की प्राण वल्लभा बाल रूप जंह धारी ॥
गगन मण्डल सों देव विमानन फूलनि की झड़ लाई
जै जै धुनि कर दुंदुभी बाजे नाचत सब नर नारी ॥
दही हृद की कीच मची है मिथिला गली गली में
चहूं ओर सब शोर करत है जीवे जनक दुलारी ॥
गरीबि श्रीखण्डि की मन अभिलाषा पूरण आज भई है
निज स्वामिनि को चंद्र वदन लखि तन मन सर्वस्व वारी ॥